1st PUC हिन्दी- साहित्य वैभाव

पद्य भाग- अ)मध्युगीन काव्य

१.कबीरदास के दोहे

I. एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1) किसके प्रताप से सब दुःख दर्द मिटते हैं?

उत्तरः सद्गुरु के प्रताप से सब दुःख दर्द मिटते हैं।

प्रश्न 2) कबीर के गुरु कौन थे?

उत्तरः कबीर के गुरु रामानंद थे।

प्रश्न 3) कबीर किस पर बलिहारी होते हैं?

उत्तरः कबीर गुरु पर बलिहारी होते हैं।

प्रश्न 4) माटी कुम्हार से क्या कहती है?

उत्तरः माटी कुम्हार से कहती है, तू मुझे क्यों रौंदता करता है? एक दिन ऐसा होगा कि जब मैं तुझे रौदूंगी।

प्रश्न 5) किसको पास रखना चाहिए?

उत्तर: निंदकों को पास रखना चाहिए।

प्रश्न 6) कस्तूरी कहाँ बसती है?

उत्तरः कस्तूरी मृग की नाभि में बसती है।

प्रश्न 7) कबीर किसकी राह देखते हैं?

उत्तरःकबीर भगवान राम की राह देखते हैं।

प्रश्न 8) क्रोध किसके समान है?

उत्तरः क्रोध मृत्यु के समान हैं।

प्रश्न 9) दुःख में मनुष्य क्या करता है?

उत्तरः दुःख में मनुष्य भगवान का स्मरण करता है।

प्रश्न 10) कबीरदास के अनुसार किसकी जाति नहीं पूछनी चाहिए?

उत्तरः कबीरदास के अनुसार साधु (सज्जन) की जाति नहीं पूछनी चाहिए।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

प्रश्न 1) गुरु की महिमा के बारे में कबीर क्या कहते हैं?

उत्तरः गुरु की महिमा के बारे में कबीर कहते हैं कि गुरु के प्रताप से सब दुःख दर्द मिट जाते हैं। वह बड़ा भाग्यशाली है कि उसे रामानंद जैसे गुरु मिले। गुरु भगवान से बढ़कर हैं क्योंकि उन तक पहुंचने का मार्ग गुरु ही बताते हैं। अतः कबीर कहते हैं कि अगर गुरू और गोविन्द दोनों उसके सामने हो तो वह गोविन्द (भगवान) से पहले गुरु को ही प्रणाम करेंगे।

प्रश्न 2) जीवन की नश्वरता के बारे में कबीर के क्या विचार हैं?

उत्तरः जीवन की नश्वरता के बारे में कबीरदास कहते हैं कि यह मनुष्य जीवन क्षणभंगुर है। इसलिए इसके प्रति अहंकार नहीं करना चाहिए। जो कुम्हार मिट्टी को रौंदता है, उससे मिट्टी कहती है-तू मुझे क्यों रौंदता है? एक दिन वह भी आयेगा, जब तू मर जायेगा, तो इसी मिट्टी में तुम्हें गाड़ दिया जाएगा। तब मैं तुझे रौंदूंगी। अतः मानुष-तन का गर्व नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 3) दया और धर्म के महत्व का वर्णन कीजिए।

उत्तरः दया और धर्म ये दोनों अच्छे गुण या आचरण हैं। जहाँ दया होती है, वहाँ धर्म भी होता है और जहाँ लोभ (लालच) होता है, वहाँ पाप होता है। इसी प्रकार जहाँ क्रोध होता है, वहाँ काल या मृत्यु होती है और जहाँ क्षमा होती है, वहाँ ईश्वर होते हैं। अतः ईश्वर की प्राप्ति के लिए दया और क्षमा को अपनाना चाहिए, लोभ व क्रोध को त्यागना चाहिए।

प्रश्न 4) समय के सदुपयोग के बारे में कबीर क्या कहते हैं?

उत्तरः समय के सदुपयोग के बारे में कबीरदास कहते हैं कि हमें जो काम कल करना है, उसे आज ही कर लेना चाहिए और जो आज करना है, वह भी कर लेना चाहिए। क्योंकि कल क्या होगा, किसने जाना? पल भर में प्रलय हो सकता है, फिर कब करोगे? बाद में पछताने से क्या होगा?

प्रश्न 5) कबीर के अनुसार ज्ञान का क्या महत्व है?

उत्तरः कबीरदास ज्ञान का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि साधु की कभी जाति नहीं पूछनी चाहिए। यदि पूछना ही है, तो उसके ज्ञान के बारे में चर्चा कर सकते हैं। हमें खरीदनी है तलवार, तो तलवार का मूल्य जानना है, कि तलवार को रखने के ज्ञान का। अतः ज्ञान को महत्व देना चाहिए।

III. ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए:

प्रश्न 1) माटी कहे कुम्हार से, तु क्या रौंदे मोय। इक दिन ऐसो होयगो, मैं रौंदुंगी तोय॥

उत्तरः

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'कबीर दास के दोहे से लिया गया है। इसके रचयिता कबीरदास हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी हमें यह संदेश देते हैं कि दुनिया नश्वर है। हमें किसी चीज का घमंड या अहंकार नहीं करना चाहिए।

स्पष्टीकरण : कवि मनुष्य के अहंकार तथा क्षणभंगुर जीवन के बारे में कहते हैं कि - मिट्टी कुम्हार से कहती है कि तू मुझे क्यों रौंदा है? इतना क्यों अहंकार करता है? एक दिन वह भी आएगा, जब मैं तुझे रौंदूंगी, तब तुम्हारा अहंकार कहाँ रहेगा? हे मानव! अहंकार मत कर। यह जीवन क्षणभंगुर है। मिट्टी का मानव मिट्टी में मिल जाएगा।

प्रश्न 2) निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटी छबाय। बिन पानी, साबुन बिना निर्मल करै सुभाय॥

उत्तरः

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'कबीरदास के दोहे' से लिया गया है। इसके रचयिता कबीरदास हैं।

संदर्भ : यहाँ कबीर कहते हैं कि आलोचना करने वाले का हमें सदैव सम्मान करना चाहिए।

स्पष्टीकरण : कबीर के अनुसार हमें अपनी निंदा करनेवाले अर्थात आलोचना करनेवाले को अपने समीप रखना चाहिए। हमें उसकी कड़वी, बुरी लगनेवाली बातों से नाराज नहीं होना चाहिए। कड़वी लगने वाली बातों में हमारी भलाई की, हमारे कल्याण का भाव निहित होता है। कबीर कहते हैं ऐसे व्यक्ति को घर में जगह देनी चाहिए। उसके पास रहने से हमको यह लाभ होगा कि वह बिना पानी साबुन के हमारे स्वभाव को स्वच्छ बना देगा अर्थात् हम उसके द्वारा निन्दा होने के डर से कोई बुरा कार्य नहीं करेंगे । यानी मनुष्य अपनी मृत्यु के बाद मिट्टी में ही मिल जाता है। इससे मनुष्य जीवन के अस्थायी होने का परिचय

मिलता है। आशय यह है कि निंदको की निंदा भरी बातें सुन-सुनकर हमें

आत्मसुधार करने का मौका मिलता है।

प्रश्न 3)कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढे बन माँहि। ऐसे घटि घटि राम हैं, दुनिया देखै नाँहि॥

उत्तरः

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'कबीरदास के दोहे' से लिया गया है। इसके रचयिता कबीरदास हैं।

संदर्भ : यहाँ कबीरदास जी कहते हैं कि हमें प्रत्येक

प्राणी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए, सच्ची भक्ति के साथ जीवन को सार्थक बनाना चाहिए, क्योंकि वही सच्ची भक्ति है।

स्पष्टीकरण : संत कवि कहते हैं कि मनुष्य ईश्वर को पाने के लिए इधर-उधर भटकता है, जो कि ईश्वर उसी के अन्दर या उसी के पास है। जैसे कि कस्तूरी मृग की नाभि में ही है, पर मृग नहीं जानता और भ्रमित होकर सारे वन में उसे ढूँढ़ता फिरता है। इसी प्रकार घट-घट में राम समाया हुआ है, पर मानव उसे भ्रम के कारण देख नहीं पाता।

प्रश्न 4) दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करै न कोय। जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे होय॥ उत्तरः

प्रसंग : प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य वैभव' के 'कबीरदास के दोहे से लिया गया है। इसके रचयिता कबीरदास हैं।

संदर्भ: यहाँ कबीरदास जी कहते हैं कि ईश्वर का हमेशा स्मरण करते रहना चाहिए।

स्पष्टीकरण : कबीरदास के अनुसार हम दुःख तकलीफ में ईश्वर को याद करते है परन्तु सुख में ईश्वर को भूल जाते है। मनुष्य केवल अपने स्वार्थ के लिए ईश्वर को याद करता है। कबीर का मत है कि जिस दिन मनुष्य सुख में ईश्वर का ध्यान करेगा उस दिन से उसे दुःख का सामना

नहीं करना पड़ेगा। ईश्वर के स्मरण से मिलने वाली शक्ति द्वारा उसका दुःख सुख में परिवर्तित हो जायेगा।

IV. दोहे का भावार्थः

1) सद्गुरु के परताप तैं मिटि गया सब दुःख दर्द। कह कबीर दुविधा मिटी, गुरु मिलिया रामानंद ॥ १ ॥

:- कबीरदास के दोहे में गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सच्चे गुरु के मिल जाने से सारे दुःख-दर्द मिट गए हैं। कबीर के अनुसार जब उन्हें रामानंद जैसे सच्चे (सद्गुरु) गुरु मिल गये, तो उनकी सारी दुविधाएँ (कठिनाइयाँ) मिट गईं।

2) गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पायँ। बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविन्द दियो बताय ॥ २॥

:- गुरु और परमात्मा दोनों एक ही साथ खड़े हुए हैं, इन दोनों में से मैं किसको प्रणाम करूं? हे गुरु, मैं आप पर न्योछावर होता हूँ। क्योंकि आपने मुझे परमात्मा के दर्शन कराये हैं। अर्थात् परमात्मा के दर्शन गुरु के उपदेश और उनकी कृपा के द्वारा ही होते हैं। इसलिए गुरु की परमात्मा से भी अधिक महत्ता है।

3) माटी कहे कुम्हार से, तु क्या रौंदे मोय। इक दिन ऐसो होयगो, मैं रौंदूंगी तोय ॥ ३॥

:- इस दोहे में कबीरदास मनुष्य के अहंकार के बारे में कहते हैं। माटी कुम्हार से कहती है-तू मुझे क्यों रौंद रहा है? एक दिन ऐसा आएगा, जब मैं तुझे रौंदूंगी। अर्थात् जन्म लेनेवाला यह मनुष्य एक दिन मिट्टी में मिल जाएगा।

4) निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय। बिन पानी, साबुन बिना निर्मल करै सुभाय ॥४॥

:- अपने निंदक को सदा अपने समीप रखो। हो सके तो अपने आँगन में ही एक कुटिया बनवा दो। उसके पास रहने से हमको यह लाभ होगा कि वह बिना पानी और साबुन के हमारे स्वभाव को स्वच्छ बना देगा अर्थात् हम उसके द्वारा निन्दा होने के भय से कोई बुरा कार्य नहीं करेंगे। आशय यह है कि निंदकों की निंदा-भरी बातें सुन-सुनकर हमें आत्म सुधार करने का मौका मिलेगा।

5) कस्तूरी कुंडली बसै, मृग ढूंढे बन माहि ऐसे घटि घटि राम हैं, दुनिया देखै नांहि ॥५॥

:- कस्तूरी नामक सुगंधित वस्तु मृग की नाभि में ही होती है, परन्तु वह उसे जंगल में खोजता फिरता है। उसी प्रकार ईश्वर सबके हृदय में निवास करता है, परन्तु लोग उसे देख नहीं पाते।

6) बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम। जिव तरसै तुझ मिलन कूँ, मनि नाहीं विश्राम ॥६॥

:- मैं तुम्हारा नाम रटती हुई बहुत दिनों से अर्थात् न जाने कब से तुम्हारे आने का मार्ग देख रही हूँ। मन तुमसे मिलने के लिए व्याकुल हो रहा हैं और मन में उसके बिना शांति नहीं है।

7) जहाँ दया तहाँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप। जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप ॥७॥

:- जहाँ दया है, वहाँ धर्म है और जहाँ लोभ है, वहाँ सदा पाप है। इसी प्रकार जहाँ क्रोध है, वहाँ काल का निवास है और जहाँ क्षमाशील प्राणी है, वहाँ ईश्वर निवास करता है।

8) काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब। पल में परलय होयगा, बहुरि करेगा कब्ब ॥८॥

:- कबीर का कहना है कि हमें जो काम कल करना है, उसे आज ही कर लें और जो आज करना है, उसे तुरन्त अभी कर लें क्योंकि इस क्षण-भंगुर संसार का तो कुछ भी निश्चय नहीं है और क्षण भर में प्रलय होने की आशंका है। इस प्रकार प्रलय होने पर तो किसी भी कार्य को करने का अवसर ही न मिलेगा। अतः आज का काम आज ही करना अच्छा है।

9) दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करै न कोय। जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे होय ॥९॥

:- कबीरदास कहते हैं कि मनुष्य जब दुखी होता है तो भगवान का स्मरण करता है और जब सुखी होता है तो भगवान को भूल जाता है। यदि सुख में भी हम भगवान को स्मरण करेंगे, तो दुःख होगा ही क्यों? अर्थात् ईश्वर का हमेशा स्मरण करते रहना चाहिए।

10) जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ॥ १० ॥

:- कबीरदास कहते हैं कि संतजन (साधु) की जाति मत पूछो, यदि पूछना ही है तो उनके ज्ञान के बारे में पूछ लो। तलवार को खरीदते समय सिर्फ तलवार का ही मोल-भाव करो, उस समय . तलवार रखने के कोष को पड़ा रहने दो। उसका मूल्य नहीं किया जाता।